5

रघुवंश- राजा दिलीप के गुणों का वर्णन-1

इस पाठ में हम तेरह श्लोकों को पढ़ेंगे यहाँ कवि विषय का कथन आरम्भ करते हैं। सूर्य से रघुवंश की उत्पत्ति हुई। सूर्यवंश का प्रथम राजा मनु थे। उसी वंश में कालक्रम से दिलीप उत्पन्न हुआ। दिलीप ही रघुवंश के प्रथम सर्ग के नायक हैं। इस पाठ में प्रधानतया महाराज दिलीप के देहादिवैशिष्ट्य का वर्णन करते हैं।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़कर आप सक्षम होंगे :

- रघुवंश की उत्पत्ति को जान पाने में;
- महाराज दिलीप के गुणों को जान पाने में;
- कालिदास की काव्यशैली को समक्ष पाने में;
- अलंकारों का समन्वय करने में समर्थ हो पाने में;
- समास व सन्धि को समक्ष पाने में और;
- श्लोकों के अन्वय आदि करने में समर्थ हो पाने में।

टिप्पणी

5.1 मूलपाठ

वैवस्वतो मनुर्नाम माननीयो मनीषिणाम्।
आसीन्महीक्षितामाद्यः प्रणवश्छन्दसामिव॥11॥

तदन्वये शुद्धिमति प्रसूतः शुद्धिमत्तरः।
दिलीप इति राजेन्दुरिन्दुः क्षीरनिधाविव॥12॥

व्यूढोरस्को वृषस्कन्धः शालप्रांशुर्महाभुजः।
आत्मकर्मक्षमं देहं क्षात्रो धर्म इवाश्रितः॥13॥

सर्वातिरिक्तसारेण सर्वतेजोऽभिभाविना।
स्थितः सर्वोन्नतेनोर्वीं क्रान्त्वा मेरुरिवात्मना॥14॥

आकारसदृशप्रज्ञः प्रज्ञया सदृशागमः।
आगमैः सदृशारम्भ आरम्भसदृशोदयः॥15॥

भीमकान्तैर्नृपगुणैः स बभूवोपजीविनाम्।
अधृश्यश्चाभिगम्यश्च यादोरत्नैरिवार्णवः॥16॥

रेखामात्रमपि क्षुण्णादामनोर्वर्त्मनः परम्।
न व्यतीयुः प्रजास्तस्य नियन्तुर्नेमिवृत्तयः॥17॥

प्रजानामेव भूत्यर्थं स ताभ्यो बलिमग्रहीत्।
सहस्रगुणमुत्स्रष्टुमादत्ते हि रसं रविः॥18॥

सेना परिच्छदस्तस्य द्वयमेवार्थसाधनम्।
शास्त्रेष्वकुण्ठिता बुद्धिर्मौर्वी धनुषि चाततता॥19॥

तस्य संवृतमन्त्रस्य गूढाकारेङ्गितस्य च।
फलानुमेयाः प्रारम्भाः संस्काराः प्राक्तना इव॥20॥

जुगोपात्मानमत्रस्तो भेजे धर्ममनातुरः।
अगृध्नुराददे सोऽर्थमसक्तः सुखमन्वभूत्॥21॥

ज्ञाने मौनं क्षमा शक्तौ त्यागे श्लाघाविपर्ययः।
गुणा गुणानुबन्धित्वात्तस्य सप्रसवा इव॥22॥

अनाकृष्टस्य विषयैर्विद्यानां पारदृश्वनः।
तस्य धर्मरतेरासीद्वृद्धत्वं जरसा विना॥23॥

टिप्पणी

5.2 मूलपाठ की व्याख्या

वैवस्वतो मनुर्नाम माननीयो मनीषिणाम्।
आसीन्महीक्षितामाद्यः प्रणवश्छन्दसामिव॥11॥

अन्वय- मनीषिणां माननीयः छन्दसां प्रणवः इव महीक्षिताम् आद्यः वैवस्वतः नाम मनुः आसीत्।

अन्वयार्थ- मनीषिणां विदुषां माननीयः पूजनीयः छन्दसां वेदानां प्रणव इव ओङ्कार इव महीक्षितां आद्यः प्रथमः वैवस्वतों नाम। वैवस्वत इति नाम्ना प्रसद्धि मनुः प्रजापतिः आसीत् अभवत्।

सरलार्थ- विद्वत्पूज्य भूपतियों में सर्वप्रथम वैवस्वत नाम का मनु हुआ था और वह वेदमंत्रों में ओंकार के समान था।

तात्पर्यार्थ- यहाँ कवि रघुवंश के वर्णन के प्रसंग में सूर्यवंश की उत्पत्ति का वर्णन करते हैं। पुराणों के अनुसार स्वम्भु आदि चौदह मनु थे। उनमें सूर्य पुत्र वैवस्वत मनु सातवें हैं। इन से सूर्यवंश की उत्पत्ति हुई। इस श्लोक में कवि उनकी पूजनीयता का वर्णन करते हैं। वैवस्वत मनु उसी प्रकार पूजनीय थे क्योंकि दिव्य दृष्टि सम्पन्न मनीषी भी उनमें श्रद्धा करते थे। वे पृथ्वी पर सभी राजाओं के मध्य में प्रथम थे। अर्थात् वे पृथ्वी के प्रथम राजा थे। इसका प्रतिपादन करने के लिए कवि ने उपमा अलंकार का मिश्रण किया- ''छन्दसां प्रणव इव'' अर्थात् छन्दों में प्रणव के समान। जैसे ओंकार वेद मंत्रों में प्रथम है वैसे ही वैवस्वत मनु भी भूपतियों में प्रथम थे। जैसे ओंकार सभी का पूजनीय है वैसे ही वे भी सभी के माननीय थे। यही इस श्लोक का आशय है।

व्याकरणविमर्श

- माननीयः - मानितुं योग्यः इत्यर्थे मानधतोः अनीयर्-प्रत्यये माननीयः इति रूपम्।
- मनीषिणाम् - मनस ईषिणः मनीषिणः। मनीषिन्-शब्दस्य षष्ठीबहुवचने मनीषिणाम् इति रूपम्।
- आसीत् - अस्-धातोः लङि प्रथमपुरुषैकवचने आसीत् इति रूपम्।
- महीक्षिताम् - महीं क्षियन्ति इति महीक्षितः, तेषां महीक्षिताम्। ,तत् षष्ठीबहुवचनान्तं रूपम्
- वैवस्वतः - विवस्वतः अपत्यं वैवस्वतः। विवस्वान् नाम सूर्यः। तस्य पुत्रः वैवस्वतः।

सन्धिकार्य

- वैवस्वतो मनुर्नामः - वैवस्वतः + मनुः + नाम
- माननीयो मनीषिणाम् - माननीयः + मनीषिणाम्
- आसीन्महीक्षितामाद्यः - आसीत् + महीक्षिताम् + आद्यः
- प्रणवश्छन्दसामिवः - प्रणवः + छन्दसाम् + इव

टिप्पणी

प्रयोगपरिवर्तनम् - मनीषिणां माननीयेन छन्दसां प्रणवेन इव महीक्षिताम् आद्येन वैवस्वतेन नाम मनुना अभूयत।

अलंकारालोचना- इस श्लोक में उपमा अलंकार है। यहाँ महीक्षिता एवं वैवस्तव ये दो पद उपमेय वाचक, छन्दसां प्रणवः ये दो उपमान वाचक है, 'इव' उपमावाचक शब्द। यहाँ महीक्षित की छन्द से और वैवस्वत की प्रणव से उपमा की गई है अतः उपमा अलंकार है।

पाठगतप्रश्न-5.1

(1) मनु और महीक्षिता की किस-किस के साथ उपमा की गई?

(2) लोक में राजाओं के प्रथम कौन हैं?

(3) वैवस्वत का अर्थ क्या है?

(4) मनु कितने थे?

(1) द्वादश, (2) त्रयोदश, (3) चतुर्दर्थं (4) पञ्चदश

(5) वैवस्वत कौन सा मनु था?

(1) षष्ठ (2) सप्तम (3) दशम (4) चतुर्थ

(6) रघुवंश किससे उत्पन्न हुआ?

(1) सूर्य से (2) चन्द्र से (3) बुध से (4) कुरू में

5.2 मूलपाठ की व्याख्या

तदन्वये शुद्धिमति प्रसूतः शुद्धिमत्तरः।
दिलीप इति राजेन्दुरिन्दुः क्षीरनिधाविव॥12॥

अन्वयः- शुद्धिमति तदन्वये शुद्धिमत्तरः दिलीप इति राजेन्दु क्षीरनिधै इन्दुः इव प्रसूतः।

अन्वयार्थः- शुद्धिमति पवित्रतासम्पन्ने तदन्वये मनुवंशे शुद्धिमत्तरः पवित्रतरः दिलीप इति दिलीपनाम्ना प्रसिद्धः राजेन्दुः भूपचन्द्रः क्षीरनिधौ क्षीरसमुद्रे इन्दुः इव चन्द्र इव प्रसूतः जातः।

सरलार्थः- जैसे चन्द्र ने क्षीरसागर में जन्म प्राप्त किया वैसे ही मनु के पवित्र वंश में दिलीप नामक पवित्रतर राजचन्द्र ने जन्म प्राप्त किया।

तात्पर्यार्थः- इस श्लोक में कवि ने रघुवंश के वर्णन प्रसंग में महाराज रघु के पिता के विषय में कहते हैं। जिनका नाम दिलीप था। वह चन्द्रमा से उपमित है। जैसे समुद्र मन्थन के समय क्षीरसागर से चन्द्रमा उत्पन्न हुए वैसे ही पवित्र मनुवंश में पवित्र दिलीप उत्पन्न हुए। चन्द्रमा जिस प्रकार लोगों के मन में आनन्द पैदा करता है। उसी प्रकार दिलीप भी प्रजाजनों के

टिप्पणी

सुखदायक थे। इस कारण ही दिलीप राजेन्दु राजश्रेष्ठ कहे गये है। मनु वंश नाम सूर्यवंश का ही है। वह तो प्रकृति से ही पवित्र है और भी पुत्रोत्पादन से पहले और बाद में शास्त्रों द्वारा कहे गये गर्भाधान आदि संस्कारों का सम्यक् पालन किया गया है। अतएव उनके पवित्रवंश में पवित्रतर दिलीप ने जन्म ग्रहण किया।

व्याकरणविमर्श

- **तदन्वये** - तस्य अन्वयः तदन्वयः इति षष्ठीतत्पुरूषसमासः, तस्मिन् तदन्वये। एतत् सप्तम्येकवचान्तं पदम्।
- **शुद्धिमति** - प्रशस्ता शुद्धिः अस्मिन् स शुद्धिमान्, तस्मिन् शुद्धिमति। एतदपि सप्तम्येकवचान्तं पदम्।
- **प्रसूतः** - प्रपूर्वकात् सूधातोः क्तप्रत्यये प्रसूत इति रूपं सिध्यति।
- **शुद्धिमत्तरः** - अतिशयने शुद्धिमत्तरः भवति। अत्र शुद्धिमत्-शब्दात् तरप्प्रत्ययः अस्ति।
- **राजेन्दुः** - राजा इन्दुः इव इति विग्रहे राजेन्दुः इति भवति। अत्र उपमेयपदपूर्वककर्मधारयसमासः अस्ति।
- **क्षीरनिधै** - क्षीराणां निधिः क्षीरनिधिः इति षष्ठीतत्पुरुषसमासः, तस्मिन् क्षीरनिधौ।

सन्धिकार्यम्-

- **दिलीप इति** - दिलीपः + इति
- **राजेन्दुरिन्दुः** - राजेन्दुः + इन्दुः
- **क्षीरनिधविव** - क्षीरनिधौ + इव

प्रयोगपरिवर्तनम्- शुद्धिमति तदप्वये शुद्धिमत्तरेण दिलीपेन इति राजेन्दुना क्षीरनिधै इन्दुना इव प्रसूतम्।

अलंकारालोचना- इस श्लोक में मनुवंश और दिलीप दो पद उपमेय, क्षीरनिधै और इन्दु ये दो पद उपमान, इव उपमावाचक शब्द और प्रसूतः साधरणधर्म है। अतः यहाँ उपमालंकार है।

पाठगतप्रश्न-5.2

7. इस श्लोक में दिलीप और मनुवंश की किसके साथ उपमा की गई?
8. यहाँ उपमा अलंकार को सिद्ध कीजिए।
9. राजेन्दुः में समास एवं विग्रह लिखिए।
10. दिलीपः किसके समान प्रसूत हुए?

    (1) सूर्य, (2) चन्द, (3) क्षीर निधि, (4) बुध

टिप्पणी

11. चन्द्रः कहाँ से प्रसूत हुए?

(1) वीरनिधों, (2) तीर निधौ, (3) क्षीर निधौ, (4) नीर निधौ

5.4 मूलपाठ की व्याख्या

व्यूढोरस्को वृषस्कन्धः शालप्रांशुर्महाभुजः।
आत्मकर्मक्षमं देहं क्षात्रो धर्म इवाश्रितः॥13॥

अन्वयः- व्यूढोरस्कोः वृषस्कन्धः शालप्रांशु महाभुजः आत्मकर्मक्षमं देहम् आश्रितः क्षात्रः धर्मः इव (स्थितः)।

अन्वयार्थः- व्यूढोरस्कः विपुलवक्षाः वृषस्कन्धः वृषभांसः शालप्रांशुः वृक्षोन्नतः महाभुजः दीर्घबाहुः आत्मकर्मक्षमं स्वकार्यसमर्थं देहं शरीरम् आश्रितः प्राप्तः क्षात्रः क्षत्रियसम्बन्धी धर्मः गुणः इव स्थितः।

सरलार्थः- दिलीप के विशाल वक्षःस्थल वृषभस्कन्ध के सामन स्कन्ध (कन्धे) दीर्घ भुजाएँ थी और वह शाल वृक्ष के समान उच्च था। स्वयं के कार्य करने में समर्थ देह प्राप्त वह क्षात्र धर्म के समान था।

तात्पर्यार्थः- इस श्लोक में कालिदास ने रघु के पिता दिलीप का वर्णन किया है। दिलीप के वक्षःस्थल (छाती) विशाल आकार की थी। बैल के कन्धे के समान बलवान कन्धे थे। वृक्षों में शालीवृक्ष अतीव उन्नत (ऊँचा) होता है। दिलीप भी उसी के समान उन्नत थे। उनकी दोनों भुजाएं भी दीर्घ थीं। इस प्रकार उसका शरीर बहुत बलिष्ठ था। दिलीप को देखकर मानते थे कि वह क्षत्रिय धर्म अपने कार्य को सम्पादित करने के लिए एक समर्थ शरीर वाले थे। यहाँ स्वकार्य का अर्थ विपन्न लोगों की रक्षा करना है। क्षात्र का अर्थ एक वीरोचित क्षत्रिय संबंधी धर्म है। वह शरीर को धारण कर दिलीप के रूप में स्थित था। क्षात्रधर्म ने अपने कर्म के योग्य दिलीप की देह को आश्रय बनाया, यह कवि ने उत्प्रेक्षा की है। इसलिए इस श्लोक में उत्प्रेक्षा अलंकार है।

व्याकरणविमर्श

- **व्यूढोरस्का**- व्यूढम् उरः यस्य स व्यूढोरस्कः इति बहुव्रीहिसमासः।
- **वृषस्कन्ध**- वृषस्य इव स्कन्धः वृषस्कन्धः इति व्यधिकरणबहुव्रीहिसमासः।
- **शालप्रांशु**- शाल इव प्रांशुः शालप्रांशु इति उपमानपदपूर्वककर्मधारयसमासः।
- **महाभुज** - महान्तौ भुर्जो यस्य सः महाभुजः इति बहुव्रीहिसमासः।
- **आत्मकर्मक्षमम्** - आत्मनः कर्म आत्मकर्म इति षष्ठीतत्पुरूषसमासः। आत्मकर्मणि क्षमः आत्मकर्मक्षमः इति सप्तमीतत्पुरुषसमासः, तम् आत्मकर्मक्षमम्। एतत् द्वितीयैकवचनान्तं पदम्।
- आश्रित - आङ्-पूर्वकात् श्रिधतोः क्तप्रत्यये कृते आश्रितः इति रूपं सिध्यति।

टिप्पणी

सन्धिकार्यम्

- व्यूढोरस्को वृषस्कन्धः- व्यूढोरस्कः+वृषस्कन्धः
- शालप्रांशुर्महाभुजः- शालप्रांशुः+महाभुजः
- क्षात्रो धर्म इवाश्रितः- क्षात्रः+धर्मः+इव+आश्रितः

प्रयोगपरिवर्तनम्- व्यूढोरस्केन वृषस्कन्धेन शालप्रांशुना महाभुजेन आत्मकर्मक्षमं देहम् आश्रितेन क्षात्रेण धर्मेण इव (स्थितम्)।

अलंकारालोचना- यहाँ महाराज दिलीप की मूर्तिमान क्षात्र-धर्म के रूप में उत्प्रेक्षा की है। क्योंकि महाराज दिलीप अपने गुणों से क्षात्र धर्म के समान प्रतीत होता था अतः यह उत्प्रेक्षा अलंकार है।

पाठगतप्रश्न-5.3

12. दिलीप के स्कन्ध किसके स्कन्ध के समान थे?
13. शालप्रांशु में कौन सा समास है विग्रह लिखिए?

5.5 मूलपाठ की व्याख्या

सर्वातिरिक्तसारेण सर्वतेजोऽभिभाविना।
स्थितः सर्वोन्नोतेनोर्वी क्रान्त्वा मेरुरिवात्मना॥14॥

अन्वय- सर्वातिरिक्तसारेण सर्वतेजोभिभाविना। सर्वोन्नतेन आत्माना मेरुः इव उर्वीं क्रान्त्वा स्थितः।

अन्वयार्थ- सर्वातिरिक्तसारेण सकलभूतेभ्यः अधिकबलेन सर्वतेजोभिभाविना सर्वभूतानि तेजसा तिरस्कारिणा सर्वोन्नतेन सर्वेभ्य उन्नतेन आत्मना शरीरेण मेरुः इव सुमेरुपर्वतः इव उर्वीं पृथ्वीं क्रान्त्वा आक्रम्य स्थितः अविद्यत।

सरलार्थ- दिलीप सभी की अपेक्षा से अधिक बलशाली थे। वह सभी प्राणियों को अपने तेज से तिरस्कृत करते थे। उसका शरीर भी बहुत उन्नत था। अतः वह सम्पूर्ण पृथिवी को अतिक्रान्त करने वाले थे। जैसे सुमेरू पर्वत पृथिवी को अतिक्रान्त करने वाला है।

तात्पर्यार्थ- इस श्लोक में कवि ने महाराजा दिलीप की सुमेरू पर्वत के साथ तुलना की है। सबसे अधिक बलवान, सभी प्राणियों को अपने तेज से तिरस्कृत करने वाला, सबसे उन्नत शरीर वाला आदि दिलीप के गुण कहे गये है। ये सभी गुण सुमेरु पर्वत में भी है। जैसे सुमेरु पर्वत स्तम्भ के समान समग्र पृथिवी की रक्षा करता है। उसी प्रकार दिलीप भी अपने बल से पृथिवी की रक्षा करता है। सुमेरु पर्वत अतीव उन्नत है यह बात पुराण आदि में भी प्रसिद्ध है। महाराज दिलीप उसी प्रकार उन्नत हैं। वह उन्नत चरित्र वाले, महान् तेजस्वी थे उन्होंने अपने

तेज से अन्य सभी राजाओं को पराजित किया। सब में अधिक बलशाली, सभी प्राणियों को तेज से तिरस्कार करने वाले वह पृथिवी का अतिक्रमण करके स्थित थे उसी प्रकार सुमेरु पर्वत पृथिवी का अतिक्रमण करके स्थित है।

व्याकरणविमर्श

- **सर्वातिरिक्तसारेण**- अतिरिक्तः सारः यस्य सः अतिरिक्तसारः इति बहुव्रीहिसमासः। सर्वेभ्यः अतिरिक्तसारः सर्वातिरिक्तसारः इति पञ्चमीतत्पुरुषसमासः, तेन सर्वातिरिक्तसारेण। इदं तृतीयैकवचनान्तं पदम्।
- **सर्वतेजोऽभिभाविना**- तेजसा अभिभवति इति तेजोऽभिभावी। सर्वेषां तेजोऽभिभावी सर्वतेजोऽभिभावी इति षष्ठीतत्पुरुषसमासः, तेन सर्वतेजोऽभिभाविना। तृतीयैकवचनान्तम् एतत् पदम्।
- **सर्वोन्नतेन**- सर्वेभ्यः उन्नतः सर्वोन्नतः इति पञ्चमीतत्पुरुषसमास, तेन सर्वोन्नतेन।
- **क्रान्त्वा**- क्रम-धातोः क्त्वाप्रत्यये क्रान्त्वा इति रूपं निष्पद्यते। अस्य अव्ययपदवत् प्रयोगः भवति।

सन्धिकार्यम्

- **सर्वोन्नतेनोर्वीम्**- सर्वोन्नतेन+उर्वीम्
- **मेरुरिवात्मना**- मेरुः+इव+आत्मना

अव्ययपरिचय- अत्र इव इति अव्ययपदं वर्तते।

प्रयोगपरिवर्तनम्- सर्वातिरिक्तसारेण सर्वतेजोऽभिभाविना सर्वोन्नतेन आत्मना मेरुणा इव उर्वीं क्रान्त्वा स्थितम्।

अलंकारालोचना- महाराज दिलीप सुमेरु पर्वत के साथ उपमित है। अतः दिलीप उपमेय है और सुमेरु पर्वत उपमान है। इव उपमावाचक शब्द। जो गुण दिलीप में थे वे सुमेरु पर्वत में भी थे यह सादृश्य है। अतः इसमें उपमालंकार है।

पाठगतप्रश्न-5.4

14. दिलीप की किस पर्वत के साथ उपमा की है?
15. सर्वातिरिक्तसारः का विग्रह कर समास का नाम लिखें।
16. सुमेरु पर्वत किसे अतिक्रान्त करके स्थित है?

5.6 मूलपाठ की व्याख्या

आकारसदृशप्रज्ञः प्रज्ञया सदृशागमः।
आगमैः सदृशारम्भ आरम्भसदृशोदयः॥15॥

टिप्पणी

अन्वयः- आकारसदृशप्रज्ञः प्रज्ञया सदृशागमः आगमैः सदृशारम्भ आरम्भसदृशोदयः (आसीत्)।

अन्वयार्थः- (सः) आकारसदृशप्रज्ञः मुर्तितुल्यबुद्धिः प्रज्ञया बुद्धया सदृशागमः समानशास्त्रपरिश्रमः आगमैः शास्त्रैः सदृशारम्भ तुल्यकर्मा आरम्भसदृशोदयः कर्मसदृशफलसिद्धिश्च (आसीत्)।

सरलार्थः- दिलीप की बुद्धि उसकी देहाकृति के समान थी। उसका शास्त्र ज्ञान भी बुद्धि के अनुरुप था। शास्त्रज्ञान के अनुसार ही वे कर्म अनुष्ठान करते थे। जैसा वह कर्म करते थे वैसा ही फल प्राप्त होता था।

तात्पर्यार्थः- लोक में शरीर विशेष को देखकर प्रायः मनुष्यों के गुणों का अनुमान लगा लेते हैं। दिलीप का शरीर भी वैसा ही था। उसका शरीर जिस प्रकार सुन्दर था उसी प्रकार उसकी बुद्धि अपरिमेय थी। इस प्रकार की बुद्धि के कारण वह वेदादि शास्त्र को सम्यक्रुप पढ़ व ग्रहण चुके थे। केवल शास्त्र पढ़ने से कुछ सिद्ध नहीं होता। अपितु शास्त्रोक्त विधि से जीवन में आचरण भी होता है। अतः दिलीप शास्त्रविहित कर्मों को अपने जीवन में यथार्थ रुप से आचरण करते थे तथा कर्मो के आचरण करने से कर्म का फल भी प्राप्त करते थे। इस प्रकार दिलीप न केवल शास्त्रों को पढ़ते थे अपितु पढ़कर उन शास्त्रोक्त वचनों को जीवन में उसी प्रकार प्रयोग करके उनके समान फल भी प्राप्त करते थे।

व्याकरणविमर्श

- आकारसदृशप्रज्ञः- सदृशी प्रज्ञा यस्य सः सदृशप्रज्ञः इति बहुव्रीहिसमासः। आकारेण सदृशप्रज्ञः आकारसदृशप्रज्ञः इति तृतीयातत्पुरुषसमासः।
- सदृशागमः- सदृशः आगमः यस्य सः सदृशागमः इति बहुव्रीहिसमासः।
- सदृशारम्भः- सदृशः आरम्भः यस्य सः सदृशारम्भः इति बहुव्रीहिसमासः।
- आरम्भसदृशोदयः- सदृशः उदयः यस्य सः सदृशोदयः इति बहुव्रीहिसमासः। आरम्भेण सदृशोदयः आरम्भसदृशोदयः इति तृतीयातत्पुरुषसमासः।

प्रयोगपरिवर्तनम्- (तेन) आकारसदृशप्रज्ञेन प्रज्ञया सदृशागमेन आगमैः सदृशारम्भेण आरम्भसदृशोदयेन (अभूयत)।

पाठगतप्रश्न-5.5

17. आगम व आरम्भ शब्द का अर्थ क्या है?
18. दिलीप की प्रज्ञा (बुद्धि) कैसी थी?
19. आकारसदृशप्रज्ञः का विग्रह व समास लिखें?
20. सदृशारम्भः का विग्रह क्या है।

    (1) सदृशस्य आरम्भ, (2) सदृशः आरम्भः (3) सदृशः आरम्भःयस्य, (4) सदृश च आरम्भः च।

टिप्पणी

5.7 मूलपाठ की व्याख्या

भीमकान्तैर्नृपगुणैः स बभूवोपजीविनाम्।
अधृश्यश्चाधिगम्यश्च यादोरत्नैरिवार्णवः॥16॥

अन्वयः- भीमकान्तैः नृपगुणैः स उपजीविनाम् यादोरत्नैः अर्णव इव अधृष्यः अभिगम्यश्च बभूव।

अन्वयार्थः- भीमकान्तैः भयङ्करमनोहरैः नृपगुणैः राजगुणैः स दिलीपः उपजीविनाम् आश्रितानां यादोरत्नैः जलजीवमणिभिः अर्णव इव समुद्र इव अधृष्यः अनभिगम्यः अभिगम्यः आश्रयणीयः च बभूव भवति स्म।

सरलार्थः- दिलीप में शौर्यादि भयंकर गुण थे। वह आश्रितों, सचिवों व सेवकों आदि के लिए अनभिगम्य थे। औदार्य, प्रजा वात्सल्य इत्यादि मनोहारी गुण भी थे। वे उपजीवियों द्वारा सेवनीय थे। जैसे समुद्र गम्भीर तरंग मकर आदि से भीषण है, किन्तु रत्नों के द्वारा सेवनीय भी है।

तात्पर्यार्थः- दिलीप में प्रताप आदि तीक्ष्ण गुण थे। उपजीवि इस कारण से डरते थे। किन्तु औदार्य आदि मनोहर गुण भी थे। आश्रित उनकी सेवा करते थे। वस्तुत वे प्रभु के रूप में हो गये थे। यदि राजा प्रभु प्रताप आदि गुणों से रहित होता है, तो प्रजा उसके आदेश की पालन नहीं करते हैं। जिससे राज्य की हानि होती है। राजा में एक भी मनोहारी गुण नहीं हो, तो राजा सम्पूर्ण रूप से भीषण होता है तो प्रजा विरूद्ध हो जाती है। इससे तो राजा की हानि ही होती है। इस प्रकार राजा और राज्य दोनों की हानि की सम्भावना होती है। अतः प्रभु में भीषणता और मनोहारी दोनों ही प्रकार के गुणों की अपेक्षा होती है। दिलीप में दोनों प्रकार के गुण थे। कवि ने एक दृष्टान्त भी दिया है। जैसे समुद्र में भीषण तरंग और मकरादि भयंकर जीव भी देखे जाते हैं। फिर भी समुद्र से रत्न प्राप्त होते हैं। उन रत्नों से लोगों के मन में आनन्द पैदा होता है। जिस प्रकार समुद्र भयंकर व मनोहारी दोनों ही प्रतीत होते हैं। उसी प्रकार दिलीप में भी भयंकर एवं मनोहारी गुणों का मिश्रण था।

व्याकरणविमर्श

- **भीमकान्तैः**- भीमाः च कान्ताः भीमकान्ताः इति कर्मधारयसमासः, तैः भीमकान्तैः। तृतीयाबहुवचनान्तं पदम् इदम।
- **नृपगुणैः** - नृपस्य गुणाः नृपगुणाः इति शष्ठीतत्पुरुषसमासः, तैः नृपगुणैः।
- **उपजीविनाम्**- उपजीवन्ति इति उपजीविनः, तेषाम् उपजीविनाम्। शष्ठीबहुवचनान्तं रूपम् इदम्।
- **अधृष्यः** - न धृष्यः अधृष्यः इति नञतत्पुरुषसमासः।
- **अभिगम्यः** - अभिपूर्वकात् गम्-धतोः यत्प्रत्यये कृते अभिगम्यः इति रूपम्। अभिगन्तुं योग्यः इत्यर्थः।

टिप्पणी

- **यादोरत्नैः** - यादांसि च रत्नानि च यादोरत्नानि इति इतरेतरद्वन्द्वसमासः, तैः यादोरत्नैः।
- **बभूव**- भूधातोः लिट्-लकारे प्रथमपुरुषैकवचने बभूव इति रूपम्।

सन्धिकार्यम्

- **भीमकान्तैर्नृपगुणैः**- भीमकान्तैः+नृपगुणैः
- **बभूवोपजीविनाम्**- बभूव+उपजीविनाम्
- **अधृष्यश्चाधिगम्यश्चः**- अधृष्यः + च : अधिगम्यः + च
- **यादोरत्नैरिवार्णवः**- यादोरत्नैः + इव + अर्णवः

प्रयोगपरिवर्तनम्-भीमकान्तैः नृपगुणैः तेन उपजीविनां यादोरत्नैः अर्णवेन इव अधृष्येण अभिगम्येन बभूवे।

अलंकारालोचना- यहाँ कवि के द्वारा दिलीप के वर्णन के लिए समुद्र का दृष्टान्त दिया है जैसे समुद्र मकरादि से भीषण व रत्नादि से मनोरम था उसी प्रकार दिलीप भी शौर्यदि तीक्ष्ण गुणों से भीषण और प्रजा वात्सल्य आदि मनोहारी गुणों से मनोरम थे। अतः यहाँ दृष्टान्त अलंकार है।

पाठगतप्रश्न-5.6

21. दिलीप किस प्रकार उपजीवियों के लिए अधृश्य व अभिगम्य थे?
22. इस श्लोक में कौन सा अलंकार है?
23. अधृश्यश्चाभिगम्य का संधिविच्छेद कीजिए।

5.8 मूलपाठ की व्याख्या

रेखामात्रमपि क्षुण्णादामनोर्वर्त्मनः परम्।
न व्यतीयुः प्रजास्तस्य नियन्तुर्नेमिवृत्तयः॥17॥

अन्वय- नियन्तु तस्य नेमिवृत्तयः प्रजाः आमनोः क्षुण्णात् वर्त्मनः परं रेखामात्रम् अपि ने व्यतीयुः

अन्वयार्थ- नियन्तुः शिक्षकस्य सारथेश्च तस्य दिलीपस्य नेमिवृत्तयः चक्रधाराव्यापाराः प्रजाः जनाः आमनोः मनुम् आरभ्य क्षुण्णात् अभ्यस्तात् प्रचलितात् च वर्त्मनः आचारपद्धतेः मार्गात् च परम् अधिकं रेखामात्रम् अपि रेखाप्रमाणम् अपि न व्यतीयुः न अतिक्रान्तवत्यः।

सरलार्थ- निपुण सारथि जिस रथ को चलाता है उस रथ के चक्र पहले विद्यमान चक्र की रेखा का अतिक्रमण नहीं करते हैं। इसी प्रकार दिलीप की प्रजा भी मनु के काल से शुरू आचरण का उल्लंघन नहीं करते थे।

टिप्पणी

तात्पर्यार्थः- इस पद्य में कवि राज्य के परिचालन में दिलीप की निपुणता का कथन करते हैं। दिलीप वैवस्वत मनु के वंश में हुए थे। अतः वह मनु के वचनों का श्रद्धा से पालन करते थे। उन्हीं के अनुसार ही राज्य का शासन किया। मनु ने सत्ययुग में मनुस्मृति लिखी। दिलीप त्रेतायुग में हुए थे। इन दोनों के मध्य काल का बड़ा अन्तर था। फिर भी राजा दिलीप और उसकी प्रजा मनु द्वारा प्रदर्शित मार्ग का उसी रूप में अनुसरण करती थी। सभी सारथी रथ को चलाते हैं। किन्तु निपुण सारथी रथ को चलाता है तो रथ से पूर्व में की गई चक्र की रेखा का अनुकरण करते हैं, कभी भी व्यतिक्रम नहीं करते। सभी सारथी वैसा करने में पारंगत नहीं होते। दिलीप भी राज्यशासन में निपुण थे। वे अपने राज्य का सम्यक् रूप से संचालन करते थे। उसके तथा उसकी प्रजा के द्वारा कभी भी मनु के वचनों का उल्लंघन नहीं किया।

व्याकरणविमर्श

- **रेखामात्रम्**- रेखा प्रमाणम् यस्य इति अर्थे रेखामात्रम् इति रूपं भवति।
- **क्षुण्णात्** - क्षुद्-धतोः क्तप्रत्यये क्षुण्णः इति रूपं तस्मात् क्षुण्णात्। ,तत् पञ्चम्येकवचनान्तं पदम्।
- **आमनोः**- आङ्-पूर्वकात् मनुशब्दात् पञ्चमीविभक्तौ आमनोः इति रूपं सिधायति। मनुम् आरभ्य इत्यर्थः।
- **वर्त्मनः**- वर्त्मन्-शब्दस्य पञ्चमीविभक्त्यैकवचने वर्त्मनः इति रूपम्। वर्त्म नाम मार्गः।
- **व्यतीयुः**- वि पूर्वकात् अति-पूर्वकात् इण्-धतोः लिटि व्यतीयुः इति रूपम्।
- **नियन्तुः**- नियच्छति इति नियन्ता, तस्य नियन्तुः।
- **नेमिवृत्तयः**- नेमीनाम् इव वृत्तिः यासां ता नेमिवृत्तयः इति बहुव्रीहिसमासः।

सन्धिकार्यम्

- **रेखामात्रमपि**- रेखामात्रम् + अपि
- **क्षुण्णदमनोर्वर्त्मनः**- क्षुण्णात् + आमनोः + वर्त्मनः
- **प्रजास्तस्य**- प्रजाः + तस्य
- **नियन्तुर्नेमिवृत्तयः**- नियन्तुः + नेमिवृत्तयः

प्रयोगपरिवर्तनम्- नियन्तुः तस्य नेमिवृत्तिभिः प्रजाभिः आमनोः क्षुण्णात् वर्त्मनः परः रेखामात्रः अपि न व्यतीये।

अलंकारालोचना- इस श्लोक मे दिलीप निपुण सारथी के रूप में उपमित है। उसकी प्रजा नेमि से उपमित है। अतः दिलीप और उसकी प्रजा उपमेय है। निपुण सारथी उसके रथ का नेमि उपमान है। न उलंघितवन्त सादृश्य ज्ञान है। अतः यहाँ उपमालंकार है।

पाठगतप्रश्न-5.7

24. रथ का चक्र किसका अतिक्रमण नहीं करता?

25. ''क्षुण्णादामनोर्वत्मान'' सन्धि विच्छेद कीजिए।

26. प्रस्तुत श्लोक का अन्वय लिखिए।

5.9 मूलपाठ की व्याख्या

प्रजानामेव भूत्यर्थं स ताभ्यो बलिमग्रहीत्।
सहस्रगुणमुत्स्रष्टुमादत्ते हि रसं रविः॥18॥

अन्वय- सः प्रजानां भूत्यर्थम् एव ताभ्यो बलिम् अग्रहीत्। हि रविः सहस्रगुणम् उत्स्रष्टं रसम् आदत्ते।

अन्वयार्थ- स दिलीपः प्रजानां जनानां भूत्यर्थं वृद्ध्यर्थं ताभ्यः प्रजाभ्यः बलिं करम् अग्रहीत् गृहीतवान्। हि तथा हि रविः सूर्यः सहस्रगुणं सहस्रधा उत्स्रष्टुं दातुं रसं जलम् आदत्ते गृह्णाति।

सरलार्थ- प्रजा के कल्याण के लिए दिलीप उनसे कर ग्रहण करते थे। न कि अपने उपयोग के लिए। जैसे सूर्य हजारों गुणा जल के बदले में पृथ्वी से जल को ग्रहण करता है।

तात्पर्यार्थ- महाराज दिलीप राज्य के निवासी प्रजाजनों के कल्याण के लिए उनसे कर ग्रहण करते थे। एक व्यक्ति जो उत्पादन करता है, उसके छः भाग किये जाते हैं तो उनमें से एक भाग को राजा कर के रूप में ग्रहण करता है। इस प्रकार की बलि को राजा अपने उपभोग के लिए प्रयोग में नहीं लेते थे। कर रूप में ग्रहण धन को राजकोष में संग्रह करते हैं। वह प्रजा की ही सम्पत्ति है। प्रयोजन होने पर राजा उस धन को प्रजाकल्याण के लिए देता है। दिलीप का कर संग्रह कैसा था, इस विषय में कवि ने उपमा दी है। सूर्य सम्पूर्ण वर्ष भर पृथ्वी के जल को सोखता हैं। ग्रीष्मकाल में पृथिवी जल के अभाव में शुष्क होती है। तब सूर्य हजार गुणा जल वर्षा के रूप में प्रदान करता है। इस प्रकार सूर्य जल को शोषण स्वयं के उपयोग के लिए नहीं करता है। अपितु अधिक जल के बदले में ही वह पृथिवी के जल को स्वीकार करता है। इसी प्रकार दिलीप भी प्रजा के कल्याण के लिए कर ग्रहण करता था।

व्याकरणविमर्श

- **भूत्यर्थम्**- भूत्यै इदम् इति विग्रहे भूत्यर्थम् इति रूपम्। अत्र नित्यसमासः वर्तते।
- **अग्रहीत्** - ग्रह्-धातोः लुडिः प्रथमपुरुषैकवचने अग्रहीत् इति रूपम्।
- **सहस्रगुणम्** - सहस्रं गुणा यस्मिन् तत् यथा तथा इति विग्रहे सहस्रगुणम् इति रूपम्। अत्र बहुव्रीहिसमासः अस्ति।

टिप्पणी

- **उत्प्रष्टुमः** - उत्-पूर्वकात् सृज्धातोः तुमुन्-प्रत्यये उत्प्रष्टुम् इति रूपम्। उत्सर्जनाय इत्यर्थः।
- **आदत्ते:**- आङ्-पूर्वकात् दाधातोः लटि प्रथमपुरुषैकवचने आदत्ते इति रूपम्।

सन्धिकार्यम्-

- **प्रजानामेव**- प्रजानाम् + एव
- **स ताभ्यो बलिमग्रहीत्** - सः + ताभ्यः + बलिम् + अग्रहीत्
- सहस्रगुणमुत्प्रष्टुमादत्ते - सहस्रगुणम्+उत्प्रष्टुम्+आदत्ते

प्रयोगपरिवर्तनम्- तेन प्रजानां भूत्यर्थम् एव ताभ्यः बलिः अगृह्यत। हि रविणा सहस्रगुणम् उत्प्रष्टुं रसः आदीयते।

अलंकारालोचना- यहाँ कवि ने दिलीप को सूर्य के साथ उपमित किया है। जैसे सूर्य जल ग्रहण करके हजार गुणा जल लौटाता है। उसी प्रकार दिलीप भी प्रजा से कर का संग्रह करते हैं। वे उसके बाद कर के रूप में संग्रहीत धन प्रजा के कल्याण के लिए प्रयुक्त करते थे। यह सादृश्य है। अतः दिलीप उपमेय व सूर्य उपमान है अतः यहां उपमालंकार है।

पाठगतप्रश्न-5.8

27. दिलीप कैसे बलि को ग्रहण करते थे?
28. प्रस्तुत श्लोक में कौन सा अलंकार है?
29. कवि ने दिलीप के कर संग्रहण के विषय में क्या कहा?

5.10 मूलपाठ की व्याख्या

सेना परिच्छदस्तस्य द्वयमेवार्थसाधनम्।
शास्त्रेष्वकुण्ठिता बुद्धिर्मौर्वी धनुषि चातता॥19॥

अन्वयः- तस्य सेना परिच्छदः (बभूव) शास्त्रेषु अकुण्ठिता बुद्धिः, धनुषि आतता मौर्वी च द्वयम् ,व अर्थसाधनं (बभूव)।

अन्वयार्थः- तस्य दिलीपस्य सेना सैन्यं परिच्छदः उपकरणं बभूव। शास्त्रेषु राजशास्त्रेषु अकुण्ठिता अव्याहता बुद्धिः मतिः धनुषि चापे आतता आरोपिता मौर्वी च ज्या च द्वयम् एव बभूव द्वे एवं अर्थसाधनं प्रयोजनकरणम् अभवत्।

सरलार्थ- दिलीप के सैन्यबल तो केवल उपकरण मात्र थे। उससे कुछ भी प्रयोजन सिद्ध नहीं होता था। शास्त्रों में अपरिमित ज्ञान और धनुष पर आरोपित प्रत्यञ्चा से ही दिलीप के प्रयोजन सिद्ध होते थे।

टिप्पणी

तात्पर्यार्थः- राजनीतिशास्त्र में कहा गया है **असन्तुष्टा द्विजा नष्टाः संतुष्टाः पार्थिवाः।** अर्थात् असंतुष्ट ब्राह्मण और सन्तुष्ट राजा नष्ट हो जाते हैं। राजा अपनी सम्पत्ति से संतुष्ट हो तो उसका नाश निश्चित है। अतः राजा को राज्यों की विजय आदि करना चाहिए। इसी कारण से दिलीप भी दूसरे राज्यों को जीतने के लिए जाते थे। युद्ध के लिए उनका महान् सैन्यबल भी था किन्तु राजा युद्ध के समय में उसे प्रयुक्त नहीं करते थे। छत्र-चामर आदि जैसे उसके उपकरण थे उसी प्रकार सैन्यबल भी उसके उपकरण मात्र थे। शास्त्रों में अपरिमित बुद्धि तथा धनुष पर आरोपित ज्याया प्रत्याञ्चा से ही उसके प्रयोजन सिद्ध होते थे। दिलीप अनेक प्रकार के शास्त्रों में महापण्डित थे। वह नीतिशास्त्र विशारद थे। उसके धनुष पर आरोपित प्रत्यञ्चा अप्रतिरोधक थी। अतः शास्त्रपाण्डित्य और धनुष पर आरोपित प्रत्यञ्चा ही उसके प्रयोजन को सिद्ध करते थे।

व्याकरणविमर्शः-

- **अर्थसाधनम्**:- अर्थस्य साधनम् इति षष्ठीतत्पुरुषसमासः।
- **अकुण्ठिता**:- न कुण्ठिता अकुण्ठिता इति नञ्तत्पुरुसमासः।
- **धनुषि**:- धनुष्-शब्दस्य सप्तम्येकवचने धनुषि इति रूपम्।
- **आतता**:- आङ्-पूर्वकात् तन्-धतोः क्तप्रत्यये स्त्रियां टापि आतता इति रूपम्

सन्धिकार्य

- **परिच्छदस्तस्य**- परिच्छदः+तस्य
- **द्वयमेवार्थसाधनम्** - द्वयम्+एव+अर्थसाधनम्
- **शास्त्रेष्वकुण्ठिता** - शास्त्रेषु+अकुण्ठिता
- **बुद्धिर्मौर्वी** - बुद्धिः+मौर्वी
- **चातता** - च+आतता।

प्रयोगपरिवर्तनम्- सेनया परिच्छदेन बभूवे। अर्थसाधनं शास्त्रेषु अकुण्ठितया बुद्धया, धनुषि आततया मौर्व्या च द्वयेन एवं बभूवे।

पाठगतप्रश्न-5.9

30. दिलीप के दो अर्थ साधन क्या थे?
31. दिलीप की सेना क्या थी?
32. शास्त्रेषु + अकुण्ठिता का संधि कीजिए।

टिप्पणी

5.11 मूलपाठ की व्याख्या

तस्य संवृतमन्त्रस्य गूढाकारेङ्गितस्य च।
फलानुमेयाः प्रारम्भाः संस्काराः प्राक्तना इव ॥ 20॥

अन्वयः- संवृतमन्त्रस्य गूढाकारेङ्गितस्य च तस्य प्रारम्भाः संस्कारा इव फलानुमेयाः (आसन्)।

अन्वयार्थः- संवृतमन्त्रस्य गुप्तविचारस्य गूढाकारेङ्गितस्य गुप्ते आकारेङ्गिते यस्य च तस्य दिलीपस्य प्रारम्भाः कर्माणि प्राक्तनाः प्राचीनाः संस्काराः इव पूर्वकर्मवासनाः इव फलानुमेयाः कार्येण अनुमातुं योग्याः आसन्।

सरलार्थः- दिलीप अत्यन्त गूढ मन्त्रणा करते थे। आकार और चेष्टा से उनके मनोभाव का ज्ञान नहीं होता था। जैसे मनुष्य की प्रवृत्ति को देखकर पूर्व जन्म के संस्कारों का ज्ञान होता है। उसी प्रकार फल को देखकर दिलीप के मनोभाव क्या थे, यह पता लगता था।

तात्पर्यार्थः- गूढ मन्त्रणा ही करनी चाहिए, यह राजनीति का नियम है। किसी भी कारण से मन्त्रणा प्रकट होती है, तो समग्र राज्य की हानि होती है। अतः दिलीप अत्यधिक गोपनीयता से मन्त्रियों के साथ मन्त्रणा करते थे। चेष्टादि को देखकर भी जन उसके साम-दाम आदि उपायों को जानने में समर्थ नहीं थे। जब कार्य सिद्ध हो जाता था, तब ही सभी दिलीप के मनोगत मन्त्रणा को जानते थे। इस सामर्थ्य के लिए कवि ने उपमान भी दिया। पूर्व जन्म में हमारे द्वारा पुण्य पापादि अनेक कर्म किये गये थे। वे ही कर्म इस जन्म में संस्कार के रूप में होते हैं। किन्तु साधारणतया वे संस्कारों को नहीं समझ पाते हैं। जब हम व्यक्तियों की प्रवत्तियों को देखते हैं, तब ही वे संस्कार प्रतीत होते हैं क्योंकि पुण्य कर्म करने वाले ही सत्कर्मों में प्रवृत्त होते हैं। पाप कर्म करने वाले ही दुष्कर्मों में प्रवृत्त होते हैं। पापकर्म करने वाले असत्कर्मों में प्रवृत्त होते हैं। इस प्रकार कार्य सिद्धि को देखकर दिलीप की मन्त्रणा का अनुमान होता था।

व्याकरणविमर्श

- **संवृतमन्त्रस्य**- संवृतः मन्त्रः यस्य स संवृतमन्त्र- इति बहुव्रीहिसमासः, तस्य संवृतमन्त्रस्य।
- **गूढाकारेङ्गितस्य** - आकारः च इङ्गितं च आकारेङ्गिते इति इतरेतरद्वन्द्वसमासः। गूढे आकारेङ्गिते यस्य स गूढाकारेङ्गितः इति बहुव्रीहिसमासः, तस्य गूढाकारेङ्गितस्य।
- **फलानुमेया** - फलेन अनुमेयाः फलनुमेयाः इति तृतीयातत्पुरुषसमासः।

सन्धिकार्यम्-

- **प्राक्तना इव** - प्राक्तनाः + इव
- **प्रयोगपरिवर्तनम्** - संवृतमन्त्रस्य गूढाकारेङ्गितस्य च तस्य प्रारम्भैः प्राक्तनैः संस्कारैः इव फलानुमेयैः (अभूयत)।

अलंकारालोचना- यहाँ दिलीप के साम, दाम आदि उपाय पूर्व के संस्कारों का अनुमान कराते हैं। अतः साम, दाम आदि उपाय उपमेय हैं। प्राक्तना संस्कार उपमान हैं, इव उपमावाचक शब्द है, अतः उपमा अलंकार है।

पाठगतप्रश्न-5.10

33. दिलीप के प्रारम्भ की किसके साथ उपमा की गई है।

34. गूढाकारेङ्गितस्य का विग्रह और समास लिखें।

5.12 मूलपाठ की व्याख्या

जुगोपात्मानमत्रस्तो भेजे धर्ममनातुरः।
अगृध्नुराददे सोऽर्थमसक्तः सुखमन्वभूत्॥ 21॥

अन्वय- सः अत्रस्तः आत्मानं जुगोप, अनातुरो धर्म भेजे, अगृध्नुः अर्थम् आददे, असक्तः सुखम् अन्वभूत्।

अन्वयार्थ- सः दिलीपः अत्रस्तः भीतरहितः आत्मानं शरीरं जुगोप रक्षितवान्। अनातुरः अरुग्णः सन् धर्म सुकृतं भेजे सेवितवान्। अगृध्नुः लोभरहितः सन् अर्थ धनम् आददे स्वीकृतवान्, असक्त, आसक्तिरहितः सन् सुखं विषयानन्दम् अन्वभूत् अनुभूतवान्।

सरलार्थ- दिलीप भय रहित होकर अपनी रक्षा करते थे। रोग रहित रहकर धर्म करते थे। लोभ रहित होकर धनोपार्जन करते थे, आसक्तिरहित होकर सुख का अनुभव करते थे।

तात्पर्यार्थ- यहाँ कवि सामान्य जन के साथ दिलीप का भेद प्रदर्शित करते हैं। धर्म-अर्थ-काम मोक्ष इन चारो पुरुषार्थों के लिए शरीर ही प्रधान साधन है। शरीर के बिना कुछ भी धर्माचरण करने में समर्थ नहीं है। लोक में सभी किसी आपत्ति से डरकर शरीर की रक्षा करते हैं। किन्तु दिलीप पुरुषार्थ सिद्धि के लिए अपने शरीर की रक्षा करते थे। प्रायः लोग जब रोग से ग्रसित होते है अथवा वृद्ध होते है तब ही धर्म का सेवन करते हैं। किन्तु दिलीप रोग रहित भी धर्माचरण करते थे। लोक में लोग धन प्राप्ति के लिए बहुत अधिक प्रवृत देखे जाते हैं। वे सभी धन लोलुप होते हैं। लोभ के वशीभूत वे धन लाभ के लिए प्रवृत होते हैं। किन्तु दिलीप लोभ के कारण नहीं, अपितु प्रजा के कल्याण के लिए धन का अर्जन करते थे। दिलीप विषयसुख में आसक्ति रहित थे। आसक्ति रहित भी सुख का अनुभव करते थे। आसक्त व्यक्ति को ही सुख-दुःख होता है किन्तु दिलीप अनासक्त थे। अतः वे सुख-दुःख से दूर स्थित थे।

व्याकरणविमर्श

- **जुगोपः**- गुप् - धातोः लिट्लकारे जुगोप इति रूपम्। रक्षितवान् इत्यर्थः।
- **अत्रस्तः**- न त्रस्तः अत्रस्तः इति नञ्तत्पुरुषसमासः।
- **भेजे**:- भज्-धातोः लिट्लकारे प्रथमपुरुषस्य एकवचने भेजे इति रूपम्। सेवितवान् इत्यर्थः।
- **अनातुरः** - न आतुरः अनातुरः इति नञ्तत्पुरुषसमासः।

- **अगृध्नुः** - न गृध्नुः इति नञतत्पुरूषसमासः।
- **आददेः** - आङ्-पूर्वकात् दाधतोः लिट्लकारे आददे इति रूपम्।
- **असक्तः** - न सक्त इति असक्तः इति नञ्तत्पुरूषसमासः।
- **अन्वभूत्** - अनुपूर्वकात् भूधातोः लुङ्-लकारे प्रथमपुरुषस्य एकवचने अन्वभूत इति रूपम्।

सन्धिकार्य-

- **जुगोपात्मानमत्रस्तो भेजे** - जुगोप + आत्मानम् + अत्रस्तः + भेजे
- **धर्ममनातुरः** - धर्मम् + अनातुरः
- **अगृध्नुराददे** - अगृध्नुः + आददे
- **सोर्थमसक्तः** - सः + अर्थम् + असक्त
- **सुखमन्वभूत्** - सुखम् + अन्वभूत्
- **प्रयोगपरिवर्तनम्** - तेन अत्रस्तेन आत्मा जुगुपे, अनातुरेण धर्मः भेजे, अगृध्नुना अर्थः आददे, असक्तेन सुखम् अन्वभूयत।

पाठगतप्रश्न-5.11

35. दिलीप कैसे धर्म-अर्थ-काम का सेवन करते थे?
36. पुरुषार्थ का प्रधान साधन क्या है?
37. जुगोपात्मानमत्रस्तोभेजे का सन्धि विच्छेद कीजिए।
38. दिलीप ने शरीर की कैसे रक्षिता की।

    (1) वह शत्रुओं से डरते थे। (2) वह मृत्यु के भयभीत थे। (3) वह पुरुषार्थो का साध ना चाहते थे। (4) वह जाराग्रस्त थे।

5.13 मूलपाठ की व्याख्या

ज्ञाने मौनं, क्षमा शक्तौ त्यागे श्लाघाविपर्ययः।
गुणा गुणानुबन्धित्वात्तस्य सप्रसवा इव॥ 22॥

अन्वय- ज्ञाने मौनं, शक्तौ क्षमा, त्यागे श्लाघाविपर्ययः, (इत्थम्) तस्य गुणाः गुणानुबन्धित्वात् सप्रसवा इव (अभूवन्)।

अन्वयार्थ- ज्ञाने (सती अपि) परवृत्तान्तं ज्ञात्वा अपि मौनं मुनिभावः शक्तौ सामर्थ्ये क्षमा तितिक्षा त्यागे वितरणे श्लाघाविपर्ययः प्रशंसाभावः (इत्थम् अनेन प्रकारेण) तस्य दिलीपस्य

टिप्पणी

गुणाः ज्ञानादयः गुणानुबन्धित्वात् विरुद्धगुणानां मौनादीनां सहचारात् सप्रसवाः इव सहोदराः इव अभूवन्।

सरलार्थ- दिलीप का ज्ञान मौन भाव के साथ था। शक्ति या सामर्थ्य के साथ क्षमा भाव था। त्याग तो आत्मप्रशंसा रहित होती थी। इस प्रकार उसके ज्ञान आदि गुण मौन आदि से विरोधी गुणों के साथ सहोदर के समान होते थे।

तात्पर्यार्थ- यहाँ भी कवि ने दिलीप के लोक इतर चरित का वर्णन करते हैं लोक में प्रायः कोई भी व्यक्ति ज्ञानी होता है तो उसमें मुनि भाव का समाश्रित नहीं होता। किन्तु दिलीप दूसरों के वृतान्त को जानकर भी मुनिवत् ही रहते थे। वस्तुतः यह ही राजा का लक्षण है। राजा यदि पण्डित होकर भी मौन नहीं रहता तो उसकी हानि होती है। इस कारण शास्त्रादि में मुखर राजा भी अनेक बार निन्दित होते हैं। दिलीप सामर्थ्यवान् होने पर भी क्षमाशील थे। सामर्थ्यवान् होने पर क्षमा प्रशंसनीय होती है। अतः दुर्बल यदि क्षमा करते हैं तो वह प्रशंसा योग्य नहीं होते। इस कारण मनुस्मृति में कहा है - ''शक्तानां भूषणं क्षमा''। लोक में लोग त्याग करके घोषणा करते हैं। किन्तु दिलीप दान आदि कर्म करके भी कहते नहीं थे। उनको प्रशंसा अभीष्ट नहीं थी। वस्तुतः ज्ञान आदि, गुण मौन आदि गुण परस्पर विरुद्ध होते हैं। किन्तु दिलीप में ये सभी गुण थे। अतः दिलीप में ये विरुद्ध गुण भी सहोदर के समान थे।

व्याकरणविमर्श -

- **मौनम्**:- मुनेः भावः मौनं भवति।
- **श्लाघाविपर्ययः**:- श्लाघायाः विपर्ययः श्लाघाविपर्ययः इति षष्ठीतत्पुरुषसमासः।
- **गुणानुबन्धित्वात्**:- गुणैः अनुबंधित्वं गुणानुबन्धित्वम् इति तृतीयातत्पुरुषसमासः, तस्मात् गुणानुबन्धित्वात्। एतत् पञ्चम्येकवचनान्तं पदम्।
- **सप्रसवाः**:- सह प्रसवः येषां ते सप्रसवाः इति बहुव्रीहिसमासः। प्रसवः नाम जन्म।

सन्धिकार्य

- **गुणा गुणानुबन्धित्वात्तस्यः**:- गुणाः + गुणानुबन्धित्वाद् + तस्य
- **सप्रसवा इवः**:- सप्रसवाः + इव
- **प्रयोगपरिवर्तनम्**:- ज्ञाने मौने शक्तौ क्षमया त्यागे श्लाघाविपर्ययेण तस्य गुणैः गुणानुबन्धित्वात् सप्रसवैः इव अभूयत।

पाठगतप्रश्न-5.12

39. दिलीप का ज्ञान किस गुण के साथ था।

40. ज्ञान आदि गुण किन गुणों के साथ सहोदर के समान थे।

टिप्पणी

41. किस की क्षमा प्रशंसा के योग्य होती है।

(1) बुद्धिमान, (2) बलवान्, (3) धनवान्, (4) दुर्बल।

5.13 मूलपाठ की व्याख्या

अनाकृष्टस्य विषयैर्विद्यानां पारदृश्वनः।
तस्य धर्मरतेरासीदवृद्धत्वं जरसा विना॥ 23॥

अन्वयः- विषयैः अनाकृष्टस्य विद्यानां पारदृश्वनः धर्मरतेः तस्य जरसा विना वृद्धत्वम् आसीत्।

अन्वयार्थः- विषयैः रूपादिभिः अनाकृष्टस्य अवशीभूतस्य विद्यानां पारदृश्वनः वेदादीन् सम्पूर्णतया पठितवतः धर्मरतेः पुण्यानुरागस्य तस्य दिलीपस्य जरसा विना वृद्धत्वं विना वार्धकम् आसीत् अभवत्।

सरलार्थः- दिलीप रूपादि विषयों से आकृष्ट नहीं होते थे। वे वेद आदि सभी शास्त्रों में पारदर्शी थे। धर्म में भी उनका प्रगाढ़ अनुराग था। अतः वह बिना वृद्धावस्था के ही वृद्ध थे। अर्थात् दिलीप का ज्ञान वृद्ध था।

तात्पर्यार्थः- कवि ने इस श्लोक में दिलीप के ज्ञानवार्धिक्य का वर्णन किया है। रूप, रस गन्ध स्पर्श और शब्द ये विषय भी दिलीप को आकर्षित नहीं करते थे। अर्थात् दिलीप उनसे वशीभूत नहीं थे। इससे वे इन्द्रिय संयमी थे। वे वेद वेदांग आदि सभी शास्त्रों का गहन अध्ययन कर चुके थे। इससे उनकी विद्वत्ता सूचित होती है। दिलीप में विषय वैराग्य, शास्त्रों में पाण्डित्य इन दोनों का समन्वय था। वे सदा धर्मासक्त थे। धर्म के कारण उनमें वैराग्य सम्यक् फलित था। इन्द्रिय संयम के साथ विद्या का अर्जन किया था। अतः उनका विद्यार्जन भी ठीक हुआ था। यद्यपि महाराज दिलीप आयु से वृद्ध नहीं थे, तथापि ज्ञान के कारण से वे ज्ञानवृद्ध थे। इस प्रकार कवि ने इनमें वृद्धत्व का आरोप किया है।

व्याकरणविमर्श -

- **अनाकृष्टस्य**- न आकृष्टः अनाकृष्टः इति नञ्तत्पुरुषसमासः, तस्य अनाकृष्टस्य।
- **पारदृश्वनः** - पारं दृष्टवान् इति पारदृश्वा, तस्य पारदृश्वनः। पारद्रष्टुः इत्यर्थः।
- **धर्मरतेः** - धर्मे रतिः यस्य स धर्मरतिः इति बहुव्रीहिसमासः, तस्य धर्मरतेः।

सन्धिकार्यम् -

- **विषयैर्विद्यानाम्** - विषयैः+विद्यानाम्
- **धर्मरतेरासीद्** - धर्मरतेः + आसीद्
- **प्रयोगपरिवर्तनम्** - विषयैः अनाकृष्टस्य विद्यानां पारदृश्वनः धर्मरतेः तस्य जरसा विना वृद्धत्वेन अभूयत।

पाठगतप्रश्न-5.13

42. दिलीप का वृद्धत्व ज्ञान से था या आयु से।

43. इस श्लोक में कहे गये दिलीप के विशेषणों का उल्लेख कीजिए।

पाठ-सार

भगवान भास्कर से रघुवंश की उत्पत्ति हुई। प्राचीनकाल में स्वयम्भू आदि चौदह मनु थे। उनमें सातवें मनु सूर्यवंश के प्रथम राजा थे। वह विद्वानों से पूज्य थे। जैसे समुद्र मंथन के समय समुद्र में चन्द्र ने जन्म प्राप्त किया, वैसे ही मनु के वंश में शुद्धात्मा दिलीप ने जन्म ग्रहण किया। उस दिलीप के वक्षःस्थल विशाल थे। उसके कन्धे वृषभ के कन्धे के समान थे। वह शालवृक्ष के समान उन्नत दीर्घबाहुशाली थे। उसके पराक्रम को देखकर स्वयं क्षात्र धर्म ही उसकी देह का आश्रय स्थान था। वह अधिक बलशाली, अपने तेज से सम्पूर्ण प्राणियों को तिरस्कृत करने वाले एवं उन्नत थे। अतः सुमेरुपर्वत के समान पृथिवी का अतिक्रान्त करके स्थित थे। उसकी बुद्धि उसकी देह के आकार के समान अपरिमित थी। वह प्रज्ञा अनुसार शास्त्राध्ययन और शास्त्रानुसार धर्माचरण करते थे। उसी के अनुरूप फल भी प्राप्त करते थे। उनमें जैसे भयंकर गुण थे वैसे ही मनोहारी गुण थे। भयंकर गुणवश आश्रित लोग डरते थे। मनोहारी गुणवश उनकी सेवा करते थे। जैसे समुद्र मकर आदि के कारण भीषण और रत्नों के कारण आदरणीय होता है। निपुण सारथी रथ चक्र से पहले चक्र द्वारा की गई रेखा का अतिक्रमण नहीं करते, उसी प्रकार दिलीप की प्रजा भी मनु के वचनों का उल्लंघन नहीं करती थी।

इससे दिलीप की राज्यशासन में निपुणता प्रतीत होती है। वह प्रजा के हित के लिए उनसे बलि ग्रहण करता था, स्वार्थ सिद्धि के लिए नहीं या अपने प्रयोजन के लिए नहीं। उसकी सेना उपकरण मात्र थी। शास्त्रपाण्डित्य और धनुष की प्रत्यञ्चा से प्रयोजन को सिद्ध करता था। वह गूढ मन्त्रणा करते थे। आकार व चेष्टा से भी मनोभाव प्रकट नहीं होने देते थे। जैसे इस जन्म में प्रवृत्ति देखकर लोगों के संस्कारों का अनुमान करते हैं। कार्य सिद्ध होने पर ही दिलीप के मनोभावों का अनुमान करते थे। वह भयरहित भी पुरुषार्थ सिद्धि के लिए शरीर की रक्षा करते थे। रोग रहित होकर धर्म, लोभ रहित होकर अर्थ, आसक्ति रहित होकर काम का सेवन करते थे। दिलीप का ज्ञान मौन के साथ, शक्ति के साथ क्षमा, त्याग प्रशंसा के रहित था। ये सभी गुण परस्पर विरूद्ध होकर भी सहोदर के समान थे। वह इन्द्रिय संयमी थे। क्योंकि वह रूपादि से आकृष्ट नहीं होते थे। वह बहुत से शास्त्रो को पढ़ चुके थे। धर्म में उसकी यथार्थ प्रीति थी। यद्यपि वह आयु से वृद्ध नहीं थे, तथापि ज्ञान वृद्ध थे।

आपने क्या सीखा

- रघुवंश की उत्पत्ति को जाना।

टिप्पणी

- राजा दिलीप के गुणों को जाना।
- कालिदास की काव्यशैली, अलंकारों का समन्वय एवं संधि एवं समासों को जाना।

पाठान्त प्रश्न

1. दिलीप के देहवैशिष्ट्य का विस्तार से वर्णन कीजिए।
2. दिलीप के ज्ञानवृद्धत्व को कवि कैसे प्रतिपादित करते हैं?
3. ज्ञाने मौनम् इस श्लोक को पूरा करके व्याख्या कीजिए।
4. दृष्टान्त अलंकार को एक उदाहरण लेकर स्पष्ट कीजिए।
5. उत्प्रेक्षा अलंकार का एक उदाहरण लेकर स्पष्ट कीजिए।
6. पाठ का सार संक्षेप में लिखिए।
7. पाठ के पठित श्लोकों के आधार पर दिलीप का चरित वर्णन कीजिए।
8. स्तम्भों के लिखित पदो का मेल करो।

स्तम्भ (क)	**स्तम्भ (ख)**
1. वैवस्तव	1. मोक्षः
2. श्लाघा	2. नृपगुणाः
3. दिलीप	3. ज्ञानम्
4. प्रांशु	4. दिलीपः
5. समुद्रः	5. ओंकार
6. भीम कान्ता	6. शालवृक्ष
7. मौनम्	7. राजेन्दुः
8. पुरुषार्थ	8. प्रशंसा

उत्तरः- 1-5, 2-8, 3-7, 4-6, 5-4, 6-2, 7-3, 8-1

पाठगतप्रश्नों के उत्तर

5.1

1. मनु सूर्य से उपमित, महीक्षित छन्द से उपमित है।
2. मनु
3. विवस्वत की सन्तान वैवस्वत, विवस्वान सूर्य का नाम है

टिप्पणी

4. ग

5. ख

6. क

5.2

7. दिलीप चन्द्र से उपमित, मनुवंश क्षीरनिधि से।

8. मनुवंशे एवं दिलीप ये दो पद उपमेय हैं, क्षीरनिधै एवं इन्दु ये दो पद उपमान है, इव उपमावाचक शब्द, उत्पन्न सादृश्य ज्ञान। अतः उपमा अलंकार है।

9. राजा इन्दु इव - राजेन्दु - उपमेयपदपूर्वकर्मधारयसमास

10. ख

11. ग

5.3

12. वृषभवत् - बैल के कन्धे के समान।

13. शाल इव प्रांशु :- शालप्राशु :- उपमानपूर्वपदकर्मधरय

5.4

14. सुमेरुपर्वत के साथ

15. अतिरिक्तः सारः यस्य सः अतिरिक्तसारः - बहुव्रीहिसमास। सर्वेम्यः अतिरिक्तसारः सर्वातिरिक्तसारः पञ्चमी तत्पुरूष समास, तेन-सर्वातिरिक्तसारेण।

16. पृथिवी को

5.5

17. आगम शब्द का अर्थ शास्त्र है और आरम्भ का अर्थ कार्य है।

18. दिलीप की प्रज्ञा उसकी देह के समान थी।

19. सदृशी प्रज्ञा यस्य सः - सदृश प्रज्ञः बहुव्रीहि समास। आकारेण सदृश प्रज्ञः-आकार सदृश प्रज्ञः तृतीया तत्पुरूष समास

20. 3

5.6

21. दिलीप भयंकर एवं नृप गुणों से उपजीवियों के लिए अधृश्य और अभिगम्य थे।

22. दृष्टान्त अलंकार

23. अधृश्यः + च + अभिगम्यः + च

5.7

24. पूर्ववर्ति चक्र के द्वारा की गई रेखा का।

25. क्षुण्णात् + आमनोः + वर्त्मनः

26. नियन्तुः तस्य नेमिवृत्तयः प्रजाः आमनोः क्षुण्णात् वर्त्मनः परं रेखा मात्रम् अपि न व्यतीयुः।।

27. दिलीप प्रजा से भत्यर्थ बलि ग्रहण करते थे।

5.8

28. दृष्टान्त अलंकार

29. सूर्य के जल ग्रहण के समान था जैसे सूर्य सम्पूर्ण वर्ष पृथिवी से जल को सोखता है। ग्रीष्मकाल में पृथिवी जल अभाव में शुष्क हो जाती है। तब सूर्य हजार गुणा जल वर्षा के रूप में देता है। इसी प्रकार दिलीप भी प्रजा कल्याण के लिए कर ग्रहण करते थे।

5.9

30. अकुण्ठिता बुद्धि और धनुष पर आरोपित प्रत्याञ्चा

31. परिच्छेद अर्थात् उपकरणमात्र

32. शास्त्रेष्वकुण्ठिता

5.10

33. पूर्व के संस्कारों के साथ

34. आकारः च इंगित च = आगरेंगिते = इतरेतरद्वन्द्वसमास। गूढ़े आकारेंगिते यस्य सः गूढाकारेंगित = बहुव्रीहिसमास, तस्य गूढाकारेङ्तिस्य

5.11

35. रोग रहित होता हुआ धर्म, लोभ रहित होता हुआ अर्थ का, अनासक्त हुआ काम का सेवन करते थे।

36. शरीर को

37. जुगोप + आत्मानम् + अत्रस्तः + भेजे।

38. 3

5.12

39. ज्ञान मौन के साथ था।

40. ज्ञान आदि गुण मौनादि गुणों के साथ सहोदर के समान थे।

41. 2

5.13

42. ज्ञान से

43. विषयैः अनाकृष्टत्वः, विद्याना पारदृश्वत्व, धर्मरति त्वम् ये तीन विशेषण है।